हज्ज का संक्षिप्त तरीका

हज्ज की किस्में

1. हज्जे तमत्तुअः उम्रा कर के हलाल हो जाना फिर उसके बाद हज्ज करना और यह हज्ज की सब से श्रेष्ठ क़िस्म है।
2. हज्जे इफ़ाद- मात्र हज्ज करना।
3. हज्जे क़िरान- उम्रा तथा हज्ज एक साथ करना।

हज्ज का पूर्ण तरीका

इहराम

मीक़ात पर पहुंचने के बाद स्नान करे और बदन पर खुशबू लगाए और इहराम का कपड़ा पहन ले और जब मस्जिद में दाखिल हो तो दो रकआत तहिय्यतुल मस्जिद पढ़ लेना चाहिये।

तलबिया

- **हज्जे तमत्तुअ** करने वाला तलबिया इस प्रकार पुकारेगाः " लब्बैक अल्लाहुम्म उम्रतन"
  " ऐ अल्लाह! मैं उम्रा करने के लिए हाजिर हूँ"।
- **हज्जे क़िरान** करने वाला कहेगाः "लब्बैक अल्लाहुम्मा बिलहज्जि वल-उम्रति"
  " ऐ अल्लाह! मैं हज्ज और उम्रा करने के लिए हाजिर हूँ"।
- और **हज्जे इफ़ाद** करने वाला कहेगाः "लब्बैक अल्लाहुम्मा हज्जन
  ऐ अल्लाह! मैं हज्ज करने के लिए हाजिर हूँ"।

तवाफ (परिक्रमा)

मस्जिदे हराम में प्रवेश करते ही सर्व प्रथम काबा शरीफ का सात बार तवाफ किया जाये। और तवाफ़ के बाद दो रकआत नमाज़ पढ़ी जाए।

सई

हज्जे तमत्तुअ करने वाला उम्रा की सई भी करेगा, जब कि हज्जे क़िरान और हज्जे इफ़ाद करने वाला सई को तवाफे इफाज़ा तक के लिए विलंब भी कर सकता है। हज्जे तमत्तुअ करने वाला सफा और मर्वा की सात बार सई करने के बाद अपने सिर का बाल मुंढ़वा लेगा या छोटा करवा लेगा। इसी के साथ उसका उम्रा पूरा हो गया, अब वह एहराम से हलाल हो जाएगा। जब कि हज्जे क़िरान और हज्जे इफ़ाद करने वाला सई करने के बाद अपने सिर के बाल न मुंडवाएगा और न छोटा कराएगा और न ही अपने इहराम से निकल सकता है, बल्कि उनको एहराम की स्थिति में ही रहना है। रहे हज्जे तमत्तुअ करने वाले तो वह आठ ज़िल्हिज्जा को अपने होटल या घर से इहराम का कपड़ा पहन कर हज्ज का तलबिया कहेगाः "अल्लाहुम्म लब्बैक हज्जन" ऐ अल्लाह! मैं हज्ज करने के लिए हाजिर हूँ"।

मिना

आठ ज़िल्हिज्जा की सुबह हज्ज करने वाले मिना जाएंगे और मिना में जुहर, अस्र, मग्रिब, ईशा और फज्र की नमाज़ें कस्र कर के पढ़ेंगे।

अर्फात

9 ज़िल्हिज्जा की सुबह सूर्योदय के बाद हाजी तकबीर पुकारते हुए अर्फात की ओर प्रस्थान करेंगे जहां वह अपना पूरा दिन ज़िक्र और दुआ में बितायेंगे। ज़ुहर और अस्र की नमाज़ें अरफात में कस्र और जमा करके पढ़ेंगे।

मुज़्दल्फा

9 ज़िल्हिज्जा के दिन सूर्यास्त के बाद हाजी अर्फात से मुज़्दल्फा की ओर प्रस्थान करेंगे और मग्रिब और ईशा की नमाज़ें मुज़्दल्फा पहुंच कर जमा और कस्र कर के पढ़ेंगे और यही पर रात गुजारेंगे।

मिना

10 ज़िल्हिज्जा के दिन फज्र की नमाज़ मुज़्दल्फा में पढ़ने के बाद हाजी खूब दुआयें करें और सूर्योदय से पहले जब सुबह की रोशनी फैल जाए तो मिना की ओर आयें और जमरतुल अक्बा को "बिस्मिल्लाह अल्लाहु अक्बर" कहते हुए सात कंकरियां एक एक कर के मारें।

क़ुर्बानी

10 ज़िल्हिज्जा के दिन हाजी जमरतुल अक्बा को सात कंकरियां मारने के बाद क़ुर्बानी करे फिर अपने सिर के बाल मुंडवाये या कटवाये। इसके साथ ही उसके लिए हर चीज़ हलाल हो गई सिवाए शारीरिक सम्बन्ध के।

तवाफे इफाज़ा हेतु मक्का की ओर प्रस्थान

उसके बाद हाजी मक्का आए और तवाफे इफाज़ा और सई करे। तवाफ और सई करने के बाद मिना वापस आ जाए, और 11 और 12 जिल्हिज्जा की रातें मिना में गुज़ारे और 11 और12 जिल्हिज्जा को सुर्य ढ़लने के बाद तीनों जमरात को सात सात कंकरियां मारे। इसी के साथ हाजी के लिए सारी चीज़ें हलाल हो गईं।
यदि 12 जिल्हिज्जा को तीनों जमरात को सात सात कंकरियां मारने के बाद मिना से निकलना चाहता हो तो सूर्यास्त से पहले मिना की सिमा से निकल जाए, वरना 13 की रात भी मिना में बितानी होगी और 13 को भी तीनों जमरात को सात सात कंकरियां मारने के बाद ही मिना से निकल सकता है।

विदाई तवाफ (परिक्रमा)

जब हाजी मक्का से अपने देश लौटने का इरादा करे तो काबा शरीफ का विदाइ तवाफ (परिक्रमा) किये बिना न निकले।

हाजी के लिए उत्तम है

हाजी के लिए उत्तम है कि हज्ज करने से पहले या बाद में मस्जिदे नब्वी की ज़ियारत के लिए जाए परन्तु यह हज्ज का हिस्सा नहीं है।

لجنة الدعوة الإلكترونية
E-Da'wah Committee
www.edc.org.kw
New Muslim
www.new-muslims.info/hin/
NewMuslimHindi
NewMuslimsHi
NewMuslimsHindi